अंक 28

वर्ष-7वां

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स
गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

क्र.	विषय	पेज
1	संपादकीय	1
2	मोह का फल	2
3	कैलाश पर्वत की महिमा	3
4	टिन पैक फुड	4
5	तेरह पंथ के नियम	5
6	सुन्दर हाथ	6
7	अशोक स्तंभ	7
8	प्रेरक प्रसंग	8
9	तीर्थंकर परिचय-भगवान आदिनाथ	9
10	गुरुदेव का संकेत	10
11	चक्रवर्ती सगर का वैराग्य	11
12	कहानी-नियम का फल	12
13	बात जिनागम से...	13
14	60 अरब का खतरनाक धंधा	14-15
15	कवितायें - सच्चा वादा	16
16	रात्रि भोजन के संबंध में ..	17
17	कहानी - सच्चा मित्र	18-19
18	आगम की बातें	20
19	जिन धर्म के संबंध में ...	21
20	तिरुपति बालाजी जैन मंदिर...	22-23
21	महावीर मुद्रा/फुरसत/वाह अचिन्त्य	24
22	तीन बातें	25
23	ऐसे बनती पानी पुरी	26
24	प्रश्न आपके उत्तर जिनगम के	27
25	समाचार कोना	28
26	आपके ब्रश से	29
27	जन्मदिन	30
28	कॉमिक्स	31-32

सदस्यता शुल्क - 400 रु. (तीन वर्ष हेतु)
1200 रु. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106

संपादकीय

प्यारे बच्चो ! जय जिनेन्द्र। आपने पिछले तीन माह में अनेक पर्व और त्यौहार मनाये होंगे । रक्षाबंधन, स्वाधीनता दिवस, दशलक्षण महापर्व, अष्टान्हिका महापर्व पर देश, समाज और धर्म के पर्व हमें निरन्तर शिक्षा देते हैं। अब आगे नवम्बर माह में भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव (दीपावली) आ रहा है। हम प्रतिवर्ष इस पर्व पर आपको इस पर्व का महत्व और इसे मनाने की विधि बताते रहे हैं। आप यदि सच में भगवान महावीर की परम्परा के जैन धर्म की संतान हैं तो आप इस पर्व को निर्वाण महोत्सव के रूप में मनाना। पटाखे नहीं फोड़ना और भगवान महावीर के सिद्धांतों को याद करना और हाँ! दोस्तों को और किसी को भी wish करते समय Happy Veer Nirvan Divas कहना। यही हमारी संस्कृति है।

आज समाज में मात्र फैशन के लिये या अपने को अलग दिखाने के लिये लोग कुछ करने, खाने, पहनने को तैयार हैं। मोबाइल, कम्प्यूटर, लेपटॉप, टेबलेट, इंटरनेट के बिना जीवन अधूरा सा लगने लगा है। फेस बुक, ट्विटर पर एकाउंट नये जमाने की पहचान बन गई है। लेकिन इन सब संसाधनों में हमारी संस्कृति और संस्कार समाप्त होते जा रहे हैं। हमारे मन को अब जरा भी टाइम नहीं मिलता। दिन भर मोबाइल से चिपका रहना व्यस्तता का प्रतीक बन गया है। हमें अपने परिवार के सदस्यों के लिये ही समय नहीं मिलता। कोई छोटा बच्चा जब बाजार में अपनी माँ के साथ जाता है तो वह अपने माँ की उंगली पकड़कर जाता है जिससे वह कहीं खो न जाये। बाजार में ज्यों – ज्यों भीड़ बढ़ती है वह बच्चा माँ की उंगली उतनी ही जोर से पकड़ता है ऐसे ही आधुनिक साधनों की भीड़ जब हमारे संस्कार खोने का डर हो तो हमें अपने महान जैन धर्म का आश्रय लेना चाहिये। हम इतने आधुनिक न हो जायें कि हम अपने जैन धर्म को ही विस्मृत कर दें। जैन धर्म को हमारी जितनी आवश्यकता नहीं है जितनी हमें जैन धर्म की। महान जैन शासन के संस्कार ही हमें ऐसी सुरक्षा प्रदान करेंगे जो हमें समस्त बुरी आदतों से बचाकर उच्चपद प्रदान करेंगे। आप शायद मेरी बात समझ रहे होंगे यदि समझ में ना आ रहा हो तो अपने माता – पिता से पूछना और समझकर इसका अनुसरण करने का प्रयास करना। ऐसी शुभकामना है।

- विराग शास्त्री

मोह का फल है ये.....!

देखिये इस एक दिन के बालक को। ये एक नहीं दो बालक हैं। दोनों का सिर एक दूसरे से जुड़ा है। सिर दो, दिल दो, मगर हाथ दो, पैर दो।

मेरा क्या अपराध ? : पतंग के धागे ने काटे पंख

Panic, shock and confusion engulfed the entire Manoharpura slum area when they heard about the death of four children on Sunday after noon. As they coulf not confirm their identity, family members from each house rushed out in search of their children. Most of the children were flying kites in the neighbourhood and their parents were out for work.

"Bachcha bacha ya nahi, ye to subah hi pata chalega agar vo ghar lautega (My son is alive or not will be known only in the morning if he returns home)," said Golu's mother when people talked about the deaths on the railway tracks. Golu did not come but the bad news soon arrived. A cop from the Jawahar Circle police station approached her with neighbours and enquired for her husband. He said her husband and siblings would have to come to jaipuria Hospital where the postmortem was being conducted. Golu's father Gopi and other relatives rushed to the mortuary for identification. On seeing his son's mutilated body he almost fell unconscious.

Family members of the children were called to the hospital for identification. Their sorrow doubled as they had to hire autos to take the bodies of the deceased after postmortem. No senior police officer or administrative officers, including the disrict collector and the area's SP arrived on the spot for investigation.

"My brother had gone around noor saying that he would return in a couple of hours and now I am carrying his dead body home,: said Prakash Bairwa, brother of Ravi Bairwa, who also died in the accident.

- By Bhayani Parivar, Chennai

कैलाश पर्वत की महिमा

कैलाश पर्वत जैन धर्मावलम्बियों को प्रमुख तीर्थ है। इस प्राचीन तीर्थ का महत्व अनेक कारणों से है। जानिये कैसे –

1. कैलाश पर्वत से प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ने मोक्ष प्राप्त किया था।
2. यहाँ पर देवों ने जयकुमार, सुलोचना की परीक्षा की थी।
3. यहाँ पर भरत चक्रवर्ती ने 99 भाईयों की स्मृति में 99 स्तूप बनवाये थे।
4. यहाँ पर भरत चक्रवर्ती ने त्रिकाल चौबीसी के 72 जिनमंदिर बनवाये थे।
5. यहीं से भरत चक्रवर्ती ने मोक्ष प्राप्त किया।
6. यहाँ पर पर नाभिराय कुलकर ने तपस्या की थी।
7. यहाँ से बाहुबली मुनिराज ने मोक्ष प्राप्त किया।
8. यहाँ पर भागीरथी ने मुनि दीक्षा ली।
9. यहाँ पर सगर चक्रवर्ती के साठ हजार पुत्र भस्म हो गये थे।
10. यहाँ से हरिषेण चक्रवर्ती के पुत्र हरिवाहन ने मुक्ति प्राप्त की।
11. यह भरत क्षेत्र के वर्तमान काल का प्रथम सिद्ध क्षेत्र है।
12. यहाँ पर अंजन निरंजन बन गये थे।
13. यहीं पर रावण ने अनादर से अपना चन्द्रहास खड्ग फेंक दिया था।
14. यहाँ पर बालि मुनिराज ने तप किया था।
15. यहाँ पर रावण ने अपनी रानियों सहित जिनेन्द्रपूजन की थी और वीणा के तार टूट जाने पर अपने हाथ की नस को ही वीणा के तार के स्थान पर बांध दिया था।
16. रावण इस कैलाश पर्वत को उखाड़कर फेंक देना चाहता था परन्तु बालि मुनिराज ने ऐसा नहीं होने दिया।
17. यहाँ से सगर चक्रवर्ती ने मोक्ष प्राप्त किया था।
18. यहाँ पर भरत चक्रवर्ती ने भगवान ऋषभदेव की 500 धनुष ऊंची प्रतिमा विराजमान की थी।
19. यहाँ पर बाहुबली ने एक वर्ष तक लगातार घोर तप किया था।
20. यहाँ पर ही नागकुमार ने केवलज्ञान प्राप्तकर मोक्ष प्राप्त किया था।

– रचना जैन, प्रतापगढ उ.प्र.

टीन पैक फूड

अर्थात्

इन्स्टेन्ट भोजन के बदले इन्स्टेन्ट मौत

सबसे खतरनाक जहर कौन सा है ? पोटेशियम सायनाइड, बार्बिटुरेट, आर्सेनिक इससे भी अधिक खतरनाक जहर है सी. बोटुलिज्म यह जहर धीरे – धीरे मारता है। इस जहर को सूक्ष्म जीव पैदा करते हैं। सी. बोटुलिज्म का पूरा नाम क्लोस्टिडियम बोटुलिज्म है। आज आधुनिकता के दौर में अधिकांश व्यक्ति टीन फूड खाना उच्च होने का प्रतीक बन गया है। यह जहर धीरे – धीरे मौत बन रहा है किसी को अचानक और किसी के शरीर में धीरे – धीरे।

आप कहेंगे कि क्या – क्या छोड़ें ? मरना तो सबको ही है एक दिन। भाई ! मरना तो प्रकृति का नियम है परन्तु अभक्ष्य खाकर मरना और दुर्गति में जाने से अच्छा है या भगवंतों के द्वारा बताये मार्ग को अपनाकर समाधिपूर्वक मरना अच्छा है .....आप स्वयं विचार करें।

सी.बोटुलिज्म नाम का एक जीवाणु होता है जो कि तीन या चार माइक्रोमीटर लम्बा होता है एक माइक्रोमीटर अर्थात् एक मीटर का दस लाखवाँ भाग यह एयर पैक डिब्बे में स्वयमेव पैदा हो जाता है यही शरीर में जाकर जहर का कार्य करता है। इस जीवाणु की यह विशेषता है कि यह 212 फेरनहीट के तापमान में भी नहीं मरता जैन दर्शन के अनुसार जिस खाद्य पदार्थ में पानी का अंश होता है उसमें असंख्यात नये – नये जीव उत्पन्न होते रहते हैं और मरते रहते हैं। इन जीवों का रस ही भोजन को जहर बनाता है। बाजार में उपलब्ध टीन फूड – टमाटर का सूप, वेजीटेबल सूप, अनेक तरह की सब्जियाँ, दही, छाछ, चमचम, रसगुल्ला, फलों का जूस आदि।

अब निर्णय आप पर है कि आप शुद्ध भोजन करके अपना जीवन को सात्विक बनाते हैं या टीन पैक फूड खाकर जहरमय जीवन बनाना चाहते हैं।

तेरह पंथ के 13 नियम

वर्तमान में जैन धर्म के अनुयायियों में दो मुख्यतः प्रचलित हैं –

1. दिगम्बर 2. श्वेताम्बर

दिगम्बर धर्म के मानने वालों में मुख्यतः दो भेद देखे जाते हैं –

दिगम्बर तेरहपंथी एवं दिगम्बर बीस पंथी

तेरहपंथ अर्थात् जो मुख्यतः तेरह नियमों के आधार पर नियमों का पालन करते हैं, वे 13 नियम इस प्रकार हैं –

1. भगवान के किसी भी अंग में पंचामृत – अभिषेक व केसर लेप नहीं करना।
2. हरे व सूखे पल – पूल भगवान को नहीं चढ़ाना।
3. भगवान के निर्वाण दिवस पर किसी प्रकार का लड्डू नहीं चढ़ाना, मात्र गोला या बादाम ही चढ़ाना।
4. अशुद्ध अन्न घुना हुआ अथवा जीव सहित अनाज भगवान को नहीं चढ़ाना।
5. दीपक से आरती नहीं करना तथा अग्नि में धूप नहीं खेना।
6. अखण्ड ज्योति नहीं जलाना व आशिका नहीं लेना।
7. सामर्थ्य होने पर पूजा खड़े होकर करना, बैठकर नहीं।
8. रात्रि में पूजन नहीं करना।
9. पद्मावती आदि रागी–द्वेषी देवी–देवताओं को नहीं पूजना।
10. भट्टारकों को नहीं पूजना एवं गुरु नहीं मानना।
11. दिशा, विदिशा, दिग्पालों को नहीं मानना और न ही ऋषिमण्डल, नवग्रह, कलिकुण्ड आदि की पूजन नहीं करना।
12. हरे सचित्त पलों को न ही भगवान को चढ़ाना और न ही इनसे मुनिराज का पड़गाहन करना।
13. महिलाओं द्वारा अभिषेक प्रक्षाल नहीं करना और न ही भगवान को स्पर्श करना।

– संयमप्रकाश ग्रन्थ से साभार

सुन्दर हाथ

एक बार चार पड़ोसनें आपस में बातें कर रही थीं। उसमें तीन महिलाओं का रंग गोरा और एक पड़ोसन का रंग काला था।

पहली पड़ोसन बोली – देखो ! मेरे हाथ कितने गोरे और कितने सुन्दर हैं।

दूसरी पड़ोसन बोली – हाँ ! मेरे हाथ भी बहुत सुन्दर हैं। तीसरी पड़ोसन ने भी अपने हाथों की प्रशंसा की। सांवले रंग वाली पड़ोसन चुप रही। इतने में एक बूढ़ी महिला वहाँ आई तो तीनों महिलाओं ने उससे पूछा – ऐ बुढ़िया ! बता किसके हाथ सबसे सुन्दर हैं। बुढ़िया ने कहा – मैं बहुत भूखी हूँ, पहले कुछ खाने को दो। तीनों पड़ोसनों ने उसे डांटते हुये कहा – हुंह ! कितनी मोटी है, फिर भी कहती है भूखी हूँ। तभी सांवले रंग वाली पड़ोसन बोली – माँ जी ! आप मेरे घर चलिये मैं आपको भोजन दूंगी। बूढ़ी महिला उसके साथ चल पड़ी और जाते – जाते बोली – रंग गोरा होने से कोई सुन्दर नहीं हो जाता, जिन हाथों से परोपकार किया जाये, वे ही हाथ सुन्दर हैं, चाहे वे काले हों या गोरे। उस महिला की बात सुनकर तीनों पड़ोसनें चुप हो गईं।

ऐसे थे हमारे पण्डित टोडरमलजी

जयपुर के प्रसिद्ध विद्वान पण्डित टोडरमलजी को राजा से बहुत सन्मान प्राप्त था। एक दिन जब राजभवन में प्रवेश कर रहे थे तो नये पहरेदार ने उन्हें नहीं पहचाना और गुस्से में पण्डितजी को एक चांटा मार दिया। दूसरे दिन में राजसभा में उस पहरेदार को बुलाया गया, पहरेदार ने राजसभा में जब पण्डितजी को देखा तो वह घबरा गया और सोचने लगा कि अवश्य इन्होंने मेरी शिकायत राजा से कर दी होगी और अब मुझे दण्ड मिलेगा। परन्तु पण्डितजी ने उस पहरेदार की ईमानदारी और कर्तव्यपालन की प्रशंसा की और उसे पुरस्कार देने के लिये कहा। राजा ने उस पहरेदार का वेतन बढ़ा दिया। यह सब देखकर वह पहरेदार अचंभित रह गया। ऐसे थे हमारे पण्डित टोडरमलजी।

निर्णय

वरुआ सागर (झांसी) में जैन धर्म के दृढ़ श्रद्धानी सेठ श्री मूलचंदजी के विवाह के कई वर्ष बाद उनका एक पुत्र हुआ। सेठ ने इस खुशी में अपार धन दान में दिया और गरीबों में बांटा। पुत्र का नाम उन्होंने श्रेयांस कुमार रखा। कुछ समय बाद वह पुत्र बीमार हो गया। ज्योतिषी ने मूलचंदजी को सलाह दी कि आप एक सोने का राक्षस बनाकर कुयें में चढ़ा दो तो बालक स्वस्थ हो जायेगा। सेठ मूलचन्दजी ने कहा – मेरा लड़का कल मरता हो तो आज मर जाये, मेरी पत्नी मर जाये, मैं मर जाऊं, मुझे सब स्वीकार है पर सोने का राक्षस चढ़ाना मुझे स्वीकार नहीं है। यह सुनकर ज्योतिषी आश्चर्य-चकित रह गया। बाद में पुण्य उदय से श्रेयांसकुमार स्वस्थ हो गया।

अशोक स्तम्भ का रहस्य

इतिहास प्रसिद्ध सम्राट अशोक के द्वारा अशोक के द्वारा अशोक स्तम्भ का निर्माण करवाया गया था। इसी अशोक स्तम्भ से भारत का राष्ट्रीय चिन्ह अशोक चिन्ह लिया गया है। अशोक चिन्ह का चक्र ही भारत के राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के मध्य में उपयोग किया जाता है। सम्राट अशोक द्वारा निर्मित अशोक चिन्ह सम्राट अशोक की जैन धर्म के गहरी आस्था को दर्शाता है। सम्राट अशोक के दादाजी सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य जैनधर्म के अनुयायी थे। अतः इनका पारिवारिक धर्म जैन धर्म सिद्ध होता है।

अशोक स्तम्भ पर सबसे ऊपर चार शेर चारों दिशाओं की ओर मुंह किये हुये हैं जो भगवान महावीर के शासनकाल को दर्शाता है क्योंकि इस समय भगवान महावीर का शासनकाल चल रहा है।

चारों दिशाओं के शेरों के नीचे बैल, हाथी, घोडा एवं शेर चार जानवरों के चित्र अंकित हैं। जिनके बीच – बीच में एक – एक चक्र है जिसमें 24 तीलियाँ हैं।

बैल चिन्ह जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का है, जिनसे इस युग के शासनकाल का प्रारंभ हुआ। उसके बाद चक्र का निशान है इसमें चौबीस तीलियाँ यह दर्शाती हैं कि भगवान आदिनाथ के धर्मचक्र प्रवर्तन में चौबीस तीर्थंकर हुये। हाथी का चिन्ह द्वितीय तीर्थंकर भगवान अजितनाथजी का है अर्थात् भगवान आदिनाथ के बाद भगवान अजितनाथ का समय आया। इसके बाद घोड़े का चिन्ह तृतीय तीर्थंकर भगवान संभवनाथजी का है इसके पश्चात् चक्र का निशान समय चक्र का दर्शाता है कि यह शासन चलता रहा है। फिर शेर का चिन्ह अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर तक की परम्परा दिखा रहा है। इसके बाद पुनः अंकित चक्र का निशान दर्शाता है कि भगवान महावीर का शासन अभी भी चल रहा है।

अशोक स्तम्भ पर जो लेख लिखा है उसमें मानव मात्र के कल्याण के लिये रास्ता बताया गया है। इस लेख में वर्णित संदेश जैन सिद्धांतों से पूर्णतया सम्मत हैं। इसमें बौद्ध धर्म पालन का कहीं भी उल्लेख नहीं है।

– विजय जैन – जैन गजट से साभार

प्रेरक प्रसंग

यूनान संत डायोजिनिस नग्न दिगम्बर अवस्था में रहता था। सम्राट सिकंदर ने प्रशंसा सुनी तो वह संत के पास पहुँचा और संत से बोला – मैं विश्व विजयी सम्राट सिकंदर हूँ। संत डायोजिनिस ने कहा – मैं सम्राटों का सम्राट डायोजिनिस हूँ। सिकंदर ने आश्चर्य से पूछा – आपका साम्राज्य कहाँ है संत ने कहा – तुम जड़ के सम्राट हो, हम चेतन सम्राट हैं। तुम्हारा साम्राज्य छूट जायेगा और मेरा साम्राज्य अमर है। यह सुनकर सिकंदर ने सिर झुका लिया।

मूर्तिपूजा

अलवर के नरेश ने एक विद्वान के प्रवचन सुनने के बाद उस विद्वान से कहा – मेरा मूर्ति पूजा में बिल्कुल विश्वास नहीं है। लोग पत्थर को पूजकर पत्थर दिल हो रहे हैं। विद्वान ने नरेश के स्वर्गवासी पिता की फोटो मंगवाई और कहा आप मूर्ति पूजा को नहीं मानते हैं, यदि इस फोटो को जूते मारे जायें तो आपको अपने पिताजी का अपमान तो नहीं लगेगा ना..... यदि आप इसे अपमान मानते है। तो आप मूर्ति पूजा को भी मानते हैं। राजा को सारी बात समझ में आ गई और वह चुपचाप चला गया।

जी.एम. फूड बहुत खतरनाक – देखिये फिल्म 'थाली में जहर'

प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक महेश भट्ट द्वारा विदेशी कम्पनियों द्वारा जी.एम.फूड की सच्चाई बताने और समाज को सावधान करने के लिये आधे घंटे की फिल्म बनाई गई है। जी.एम. फूड के नाम पर विदेशी कम्पनियों के द्वारा हमारी थाली में जहर परोसा जा रहा है। जी. एम. फूड का अर्थ जानवरों और इंसानों के जीन्स से गेहूँ, चाँवल, सोयाबीन, मक्का की पैदावार बढ़ाकर तैयार किये गये भोजन के पदार्थ। कई देशों में जी. एम. फूड पर पाबंदी लगा दी गई है। परन्तु हमारे देश के नेताओं के भ्रष्टाचार और सरकारी नीति के अभाव में जी. एम. फूड खुलेआम बेचा जा रहा है। इस फिल्म में जी.एम.फूड के विस्तार से बताया गया है। आप इस फिल्म को देखने www.youtube.com बेवसाइट में जाकर "Poison in my plater' के नाम से search करके डाउनलोड कर सकते हैं।

– युगराज जैन, मुम्बई

तीर्थंकर परिचय

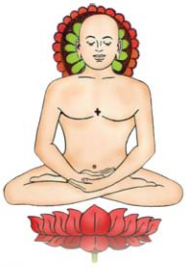

प्रथम तीर्थंकर

भगवान आदिनाथ

इस अंक से हम एक नया स्तंभ प्रारंभ कर रहे हैं
इसके अन्तर्गत 24 तीर्थंकरों का परिचय
क्रमशः दिया जायेगा।

पिता का नाम	– नाभिराय
माता का नाम	– मरुदेवी
चिन्ह	– बैल
जन्म स्थान	– साकेता (विनीता अयोध्या)
शरीर का रंग	– पीत
शरीर की ऊँचाई	– 500 धनुष
कुल आयु	– 84 लाख वर्ष पूर्व
वैराग्य का कारण	– सभा नृत्य करती हुई नीलाजंना की मृत्यु
दीक्षा के लिये उपयोग की गई पालकी का नाम	– सुदर्शना
प्रथम आहार देने वाले श्रावक	– राजा श्रेयांस
तपस्या काल	– 1000 वर्ष
समवशरण का विस्तार	– 12 योजन
कुल गणधर और प्रमुख गणधर का नाम	– 84 / वृषभसेन
प्रमुख आर्यिका का नाम	– ब्राह्मी
आर्यिकाओं की संख्या	– 3,50,000
श्रावक–श्राविकाओं की संख्या	– 3 लाख श्रावक और 5 लाख श्राविकायें
निर्वाण स्थान	– कैलाश पर्वत
निर्वाण का आसन	– पद्मासन
पंचकल्याणक की तिथियाँ	– गर्भ – आषाढ़ वदी 2
	जन्म – चैत्र कृष्ण 9
	तप – चैत्र कृष्ण 9
	ज्ञान – फागुन कृष्णा 11
	मोक्ष – माघ कृष्णा 14

गुरुदेव का संकेत

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी प्रसिद्ध आध्यात्मिक प्रवक्ता हुये हैं। उनके सम्पूर्ण जीवन के अनेक प्रसंग प्रेरणादायी हैं। उनके जीवन की छोटी – छोटी बातें भी उनके पवित्र चिन्तन का परिचय देती हैं।

एक बार मुम्बई प्रवास के अवसर किसी श्रेष्ठी ने उन्हें भोजन के लिये अपने घर पर आमंत्रित किया। भोजन करवाने के पश्चात् उसने अपने नये घर का परिचय देना प्रारंभ किया और पूरे घर को गुरुदेवश्री को दिखाया। श्रेष्ठी सोच रहा था कि गुरुदेवश्री उसके सुन्दर घर की प्रशंसा करके उसे आशीर्वाद देंगे। गुरुदेवश्री ने कुछ देर पश्चात् कहा कि भाई! अब इस घर से निकलना मुश्किल है।

गुरुदेवश्री के अभिप्राय के अनुसार घर जितना भव्य, सुविधायुक्त और सुन्दर होगा उससे उतना ही राग होगा और घर के बाहर जरा सी प्रतिकूलता भी उसे सहन नहीं होगी उसे घर छोड़ना असंभव लगेगा।

सम्राट कैसे हार गया

नेपोलियन बोनापार्ट का नाम आप सब जानते होंगे। कहते हैं कि असंभव जैसा शब्द उसकी डिक्शनरी में नहीं था। एक बार उसने सेना को आदेश दिया – आगे कदम। पर आगे तो पहाड़ था इसलिये सेनापति ने आकर पूछा कि महाराज! आगे तो पहाड़ है और आपने कहा आगे तो किस दिशा में आगे बढ़ना है? नेपोलियन ने तुरंत तलवार से सेनापति का सिर काट दिया और फिर कहा आगे कदम चाहे पहाड़ हो या सागर, मेरे मुंह के सामने जो दिशा हो वहाँ आगे बढ़ो। सारी सेना काम में लग गई और आल्प्स नाम के पर्वत को तोड़कर आगे का रास्ता बना कर आगे बढ़ गई।

ऐसा शूरवीर नेपोलियन एक छोटी सी लड़ाई में हार गया। शत्रु की सेना ने नेपोलियन को जीवित पकड़ लिया और सेंटहेलि के एक टापू पर चारों ओर से तार बांधकर छोड़ दिया। नेपोलियन ने रो – रोकर उसकी जिन्दगी निकली और वह मर गया। बाद में इसकी शोध हुई कि नेपोलियन जैसा योद्धा एक लड़ाई में कैसे हार गया? पता चला कि उस दिन नेपोलियन ने भोजन में एक प्याज खाई थी। प्याज खाने से उसके मन पर उसका संतुलन नहीं रहा, उसके मन में आकुलता होती रही, इस कारण से वह अपनी सेना को योग्य मार्गदर्शन नहीं दे पाया और हार गया और दुनिया का एक बड़ा योद्धा नेपोलियन एक प्याज के कारण युद्ध हार गया।.

– हेमरत्न विजय महाराज (श्वेताम्बर साधु)

चक्रवर्ती सगर का वैराग्य

एक चक्रवर्ती सगर के साठ हजार पुत्र बार कैलाश पर्वत की वंदना करने गये। वहाँ पर चैत्यालयों की वंदना करने के बाद दंडरत्न से कैलाश पर्वत के चारों ओर खाई खोदने लगे। नगेन्द्र देव ने उन्हें क्रोधदृष्टि से देखा जिससे वे सब जलकर भस्म हो गये। उनमें से दो पुत्र आयुकर्म शेष रहने के कारण बच गये जिसमें एक का नाम भीमरथ और दूसरे का नाम भागीरथ था। तब सभी लोगों ने सोचा कि जब यह समाचार चक्रवर्ती सुनेंगे तो उनकी तत्काल मृत्यु हो जायेगी। ऐसा विचारकर मंत्रियों, पंडितों और विशेष लोगों ने चक्रवर्ती को कुछ नहीं बताया और प्रतिदिन की तरह उनके पास जाकर उनकी विनय की।

उसी समय एक वृद्ध ब्राह्मण आया और कहा – हे सगर ! इस संसार की असारता देखकर भव्य जीव इससे मुक्त होने का उपाय करते हैं। पूर्व में आपके समान भरत चक्रवर्ती राजा हुये, उनका एक अर्ककीर्ति नाम पुत्र था वह महापराक्रमी था। उसके नाम पर सूर्यवंश का प्रारंभ हुआ। लेकिन सभी वैभवशाली राजा समय के साथ चले गये। जैसे पक्षी रात्रि में एक वृक्ष पर आकर ठहरते हैं और सुबह होते ही अलग – अलग दिशाओं में गमन करते हैं ऐसे ही संसार में सभी जीव आयु पूरी होते ही दूसरी गति में गमन करते हैं। संसार में बड़े महाबली, वैभव वाले सब चले गये ऐसा स्वरूप देखकर भी हमारा मन नहीं कांपता यह मोह की ही महिमा है। मात्र दिगम्बर मुनि ही आत्म स्वरूप को जानकर मुक्ति प्राप्त करते हैं। वे ही धन्य हैं। राजसभा के सभी सदस्य भी इसी तरह की बातें करने लगे।

चक्रवर्ती ने सभी लोगों की बातें सुनकर अपने दोंनो पुत्रों को देखा और विचार करने लगे कि मेरे साठ हजार पुत्र सदा साथ ही आते हैं, आज दो ही पुत्र आये हैं और वे भी उदास बैठे हैं। लगता मेरे शेष सभी पुत्र मृत्यु को प्राप्त हुये हैं। ये ब्राह्मण और मंत्रीगण मुझे अनेक उपायों से समझा रहे हैं, ये मेरा दुःख नहीं देख सकते।

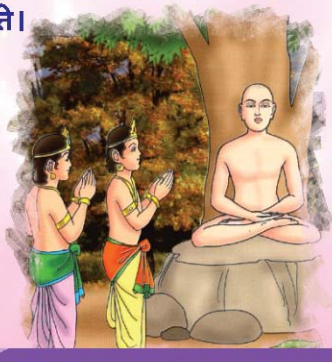

ऐसा विचार करते हुये चक्रवर्ती सगर को वैराग्य हो गया और उन्होंने भागीरथ को राज्य सौंप दिया और भगवान अजितनाथ के समवशरण में जाकर अपने पुत्र भीमरथ के साथ मुनि दीक्षा ले ली। कुछ समय के पश्चात् केवलज्ञान प्राप्त कर सिद्ध अवस्था की प्राप्ति की।

कहानी

नियम का फल

एक सत्य घटना है। एक बार एक नगर के पास एक उपवन में मुनि सागरसेन आकर ठहर गये। उनके दर्शन करने के लिये राजा और पूरे नगरवासी अत्यन्त प्रसन्नता के साथ आ रहे थे। वे मुनिराज की पूजा वन्दना करके वापस अपने नगर चले गये। मुनि सागरसेन आत्मध्यान में लीन थे। इसी समय एक सियार ने भीड़ देखकर समझा कि नगर वाले किसी मुर्दे को डाल गये हैं। वह मुनिराज को खाने के लिये आ गया। सियार को पास में आता देखकर मुनिराज ने जान लिया कि यह सियार इस शरीर को खाने के लिये इधर आ रहा है और यह सियार अत्यंत भव्य जीव है। यह व्रत धारण करके अगली पर्यायों में मोक्ष जायेगा। इसलिये उन्होंने उसे सियार को उपदेश दिया – हे भव्य जीव! तुझे अपने आत्मा की खबर नहीं है। तू पापों के फल में ही इस पशु पर्याय में आया है। पर अब तेरा अच्छा समय नजदीक आ रहा है, तू महान जैन धर्म को ग्रहण कर और व्रतों का पालन कर तेरा कल्याण होगा।

मुनिराज के मधुर वचन सुनकर सियार अत्यंत शांत भाव से मुनि के चरणों में बैठ गया। मुनिराज बोले – हे भव्य! तुम रात्रि भोजन का त्याग करो। मुनिराज की उपदेश को सियार समझ गया और उसने रात्रि में भोजन–पानी का त्याग कर दिया। कुछ दिन बाद उसने मांस सेवन भी छोड़ दिया। जो कुछ सादा भोजन मिलता उससे ही अपना पेट भरकर संतुष्ट रहता और सदा मुनिराज को याद करता था। पर्याप्त भोजन न मिलने से वह कमजोर होता गया।

एक दिन उसे बहुत जोर से प्यास लगी। वह एक कुंये में पानी पीने गया उस कुंये पानी बहुत नीचे था, सियार जब पानी पीने सीढ़ियों से नीचे उतरा तो नीचे अंधेरा था क्योंकि सूर्य का प्रकाश नीचे तक नहीं पहुँच पा रहा था। सियार ने सोचा कि रात्रि हो गई है इसलिये वह बिना पानी पिये बाहर आ गया। जब वह ऊपर आया तो उसे दिन दिखाई पड़ा। वह वापस पानी पीने नीचे उतरा तो वहाँ अंधेरा था वह फिर रात के भ्रम से बिना पानी पिये बाहर आ गया। इस तरह उसने कई बार किया और धीरे – धीरे रात्रि हो गई। वह प्यास से व्याकुल होने लगा तो उसने मुनिराज को स्मरण किया और शांत भाव से उसका मरण हो गया। वह मरकर रात्रिभोजन त्याग के प्रभाव से प्रीतिंकर नाम का राजकुमार हुआ। इस प्रीतिंकर नाम के राजकुमार ने भगवान महावीर के समवशरण में मुनि दीक्षा ली और उसी भव से मोक्ष प्राप्त किया।

देखा बच्चो! उस सियार ने एक नियम के समता से पालन करने के फल में आगे चलकर मोक्ष प्राप्त किया। इसलिये हमें भी नियमों का पालन अवश्य करना चाहिये।

बात जिनागम से ...

तीर्थंकर के जन्म के समय देवों द्वारा बजाये जाने वाले 29 प्रकार के बाजे

1.ढोल 2.नगाड़ा 3. ढोलक 4. ढफ 5. डमरू 6.हुगडुगी 7. मृदंग 8. तबला 9. तासे 10. मुरज 11. तोमड़ी 12. घड़ा 13. खंजरी 14. चौकी 15. चंग 16. नौबत 17. ढांक 18. पचैमवई 19. दौरा 20. खेल 21. दायरा 22. उदकई 23. सिंग 24. गिड़कट्टी 25. संतूर 26. गोलथम 27. ढपला 28. नारी 29. तुमक

पांचो परमेष्ठियों के 143 मूल गुण

अरिहंतों के 46, सिद्धों के 8, आचार्यों के 36, उपाध्यायों के 25 और साधुओं के 28 इस तरह कुल मिलाकर 143 गुण होते हैं।

अरिहंतों के 46 गुण निम्न हैं –

अरिहंतों के जन्म के दश अतिशय – 1. अत्यन्त सुन्दर शरीर 2. अति सुगन्धमय शरीर 3.पसीना रहित शरीर 4. मल–मूत्र रहित शरीर 5. प्रिय और हितकारी वचन 6. अतुल्य बल 7. सफेद खून 8. शरीर में 1008 लक्षण 9. समचतुरस्र संस्थान 10.वज्रवृषभनाराच संस्थान।

केवलज्ञान के दश अतिशय – 1.सौ योजन तक अकाल नहीं पड़ना 2.आकाश में गमन 3. चारों ओर मुख दिखाई देना 4. दया का भाव 5.उपसर्ग नहीं होना 6. कवलाहार नहीं होना 7. समस्त विद्याओं के स्वामी होना 8. नाखून और बाल नहीं बढ़ना 9. नेत्र की पलक नहीं झपकना 10. शरीर की छाया नहीं पड़ना

देवों द्वारा किये जाने वाले 14 अतिशय – 1. अर्द्धमागधी भाषा 2. जीवों में परस्पर मित्रता 3. दिशाओं का निर्मल होना 4. आकाश का निर्मल होना 5. सब ऋतुओं के फल व फूलों का खिलना 6. पृथ्वी का दर्पण के समान निर्मल होना 7. चरणों के नीचे 225 स्वर्ण कमल की रचना 8. देवों द्वारा जय – जयकार होना 9. मंद सुगन्धित वायु का चलना 10. सुगन्धित जल की वर्षा होना 11.भूमि कंटक रहित होना 12. सारी सृष्टि का आनन्दमय होना 13. भगवान के आगे धर्म चक्र का चलना 14. अष्ट मंगल द्रव्य का होना

4 अनन्त चतुष्टय – 1.अनन्त दर्शन 2. अनन्त ज्ञान
3.अनन्त सुख 4. अनन्त वीर्य

8 प्रातिहार्य – 1.सिंहासन 2. पुष्प वृष्टि 3.अशोक वृक्ष 4. प्रभा मण्डल भामण्डल 5.दिव्य ध्वनि 6.दुन्दुभि बजा 7. तीन छत्र 8. चौंसठ चंवर

60 अरब का खतरनाक धंधा

दिनेश कनौजिया उत्तरप्रदेश के जनपद फैजाबाद का रहने वाला था। वह तेरह वर्ष की उम्र में घर से भागकर मुम्बई आ गया था। दो माह तक होटल में बर्तन धोने का काम किया, बाद में एक ऐसे गिरोह के कब्जे में चला गया जो पांच हजार से अधिक भिखारियों से भीख मंगवाता था। अब दिनेश 53 वर्ष का हो गया है और अब वह एक मस्जिद के सामने बैठकर भीख मांगता है। 38 वर्ष पूर्व जब होटल में नौकरी करता था तब उसे एक हसन नाम का आदमी ने अच्छी नौकरी का लालच देकर धारावी में मेराज नाम के व्यक्ति को पाँच हजार रुपये में बेच दिया था। अगले दिन उसे सात दूसरे बच्चों के साथ बेहोश कर दिया गया और बेहोशी में उसके घुटने के नीचे से दोनों पैर काट दिये गये। उसे भूखा प्यासा रखा गया ताकि वह कमजोर हो जाये। एक माह तक उसे घिसट–घिसट कर चलना सिखाया गया फिर उसे भीख मांगना सिखाया गया। वह न रो सकता था न चीख सकता था। उसे कुछ डॉयलाग बोलने के लिये कहा गया– ''भगवान के नाम दे दो बाबूजी। आपके बच्चे सलामत रहेंगे। बाढ़ में मेरा परिवार बह गया, मुझ अपाहिज पर दया करो।'' जब तक वह भीख मांगता था एक आदमी उसके आसपास रहकर उस पर नजर रखता था। उसने 17 वर्ष तक भीख मांगी,जब उसका शरीर कमजोर हो गया तब उसे नदीम भूरा को बेच दिया गया। नदीम के पास ग्रांट रोड और हाजी अली एरिया का ठेका था। सुबह उसे नाश्ता नहीं दिया जाता था जिससे उसके चेहरे पर भूखे होने के भाव दिखें। यदि कोई उसे भीख में कुछ खाने दे दे तो ठीक वरना उसे रात में ही भोजन दिये जाता था।

ऐसे ही बासठ साल के गुरमीत सिंह जोधेवाल बताते हैं कि वे भी 40 वर्ष पहले मुम्बई काम करने के लिये आये थे, बहुत प्रयास करने पर भी नौकरी नहीं मिली तो उसे जगू अंसारी के भिखारी गिरोह में निगरानी इंस्पेक्टर का काम मिला। जगू अंसारी के भिखारी भायखला, चिंचपोकली, मस्जिद बंदर और एलफिस्टन रोड स्टेशन के बाहर भीख मांगते थे। गुरमीत के अंडर में पांच भिखारी थे जो मस्जिद बंदर स्टेशन के बाहर भीख मांगते थे। गुरमीत का काम

सुबह पांचों भिखारियों को मनी एरिया (भीख मांगने की जगह) तक ले जाना, शाम को वापस अड्डे तक ले जाना और भीख में मिले रुपये का हिसाब रखना था। उससे एक गल्ती हो गई, उसके अंडर में उड़ीसा का एक युवक मंत्रोता हिबु भीख मांगता था, उसका निचला ओंठ काट दिया गया था,उसे अपने माता – पिता की बहुत याद आती थी। गुरमीत ने उसे चुपके से उड़ीसा की टेन में बिठा दिया। जब उसके ठेकेदार जगू अंसारी को मालूम हुआ तो उसने गुरमीत की दोनों आंखें फोड़ दी गईं और दोनों पैर काटकर दूसरे गिरोह को बेच दिया।

महाराष्ट सरकार की एक रिपोर्ट के अनुसार सन् 2008 तक सिर्फ मुम्बई में ही 6 लाख भिखारी थे। यदि प्रत्येक भिखारी औसतन प्रतिदिन भीख से 100 रुपये कमाता है तो प्रतिदिन 60 लाख की कमाई होती है। इन 6 लाख भिखारियों में अधिकांश जबरदस्ती बनाये गये भिखारी हैं। इनमें सबसे अधिक भिखारी उन राज्यों के हैं जिन राज्यों में सबसे अधिक गरीबी और बेरोजगारी है। यहीं से बच्चों का अपहरण कर या लालच देकर मुम्बई लाया जाता है और उनके अंग काटकर उन्हें भिखारी बनाया जाता है। सबसे अधिक कमाई हाजी अली दरगाह, सिद्धि विनायक मंदिर, महालक्ष्मी मंदिर से होती है। इस काम में अंडरवर्ल्ड के लोग भी शामिल हैं और प्रतिवर्ष अलग – अलग स्थानों के ठेके दिये जाते हैं। बड़े शहरों में मेटो भिखारी कमर्शियल होते हैं। इन भिखारियों की कुशलता और अनुभव के आधार पर इनका भीख मांगने का स्थान निश्चित किया जाता है। कुछ स्थान दैनिक शुल्क पर दिये जाते हैं । वर्ष 2002 में दिल्ली के तत्कालीन पुलिस ज्वाइंट कमिश्नर टाफिक पुलिस श्री मैक्सवल परेरा ने माना था कि दिल्ली में भिखारियों के कई गैंग काम कर रहे हैं।

एक सर्वे के अनुसार देश में इस समय लगभग 10 लाख भिखारी हैं। यदि प्रत्येक भिखारी की आय प्रतिदिन 50 रुपये मानी जाये तो आप अनुमान लगा सकते हैं कि ये भिखारियों का समूह साल में अरबों रुपये कमा रहा है।

इसलिये किसी को भीख देने से पहले सोचिये कहीं हमारा पैसा भीख के काम का समर्थन तो नहीं कर रहा और उन निर्दोष बच्चों को यातना में निमित्त तो नहीं बन रहा। इसलिये नगद राशि दान में न दें।

– एक रिपोर्ट के आधार से प्रस्तुत (विराग शास्त्री)

सच्चा वादा

मचँ माँ ये तो बता, पहले प्रभु जी कौन थे – 2
पहले प्रभुजी बच्चे थे, तेरे जैसे सच्चे थे
प्रभुजी पहले बच्चे थे, जैसे आज मैं बच्चा हूँ
पर प्रभुजी हो गये सुखी, मैं क्यों रहता यहाँ दु:खी
प्रभु ने जाना आत्मा, हो गये वे परमात्मा
तुम भी जानो आत्मा, बन जाना परमात्मा
समझ गया माँ तेरी शिक्षा, सुन लो माँ अब लूंगा दीक्षा
मुझे न जानो तुम बच्चा, करता वादा मैं सच्चा।
निज में दृष्टि जोड़ के, मोह भाव को छोड़ के
महावीर बन जाऊँगा, भगवन सम हो जाऊँगा

ब्र.सुमतप्रकाशजी जैन

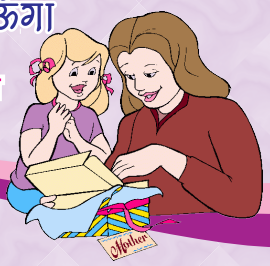

बाल संकल्प

हम बहादुर वीर बनेंगे, भूत प्रेत से नहीं डरेंगे ।
मात – पिता की सेवा करेंगे, गुरु की आज्ञा शीश धरेंगे ।।
प्राण किसी के नहीं हरेंगे, सब जीवों पर दया करेंगे ।
झूठ वचन हम नहीं कहेंगे, सत्य धर्म पर डटे रहेंगे ।।
गाली कभी नहीं हम देंगे, बिना दिये कोई चीज न लेंगे ।
चुगली हम तो नहीं करेंगे, खोटी संगति नहीं करेंगे ।।
कभी किसी से नहीं लड़ेंगे, बड़े जनों की विनय करेंगे ।
जिनवर भक्ति सदा करेंगे, फिर हम भी भगवान बनेंगे ।।

रात्रि भोजन के सम्बन्ध में हिन्दु पुराणों में उल्लेख

रात्रि भोजन त्याग के सम्बन्ध में जैन ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। रात्रि भोजन त्याग प्रत्येक जैन का सर्वप्रथम और सामान्य लक्षण है। लेकिन हिन्दु ग्रन्थों में भी रात्रि भोजन निषेध का उल्लेख मिलता है।

महाभारत के शान्ति पर्व में कहा है –

चत्वारि नरक द्वारं प्रथमं रात्रि भोजनम् ।
परस्त्री गमनं चैव, सन्धानानन्तकायिकम् ॥

अर्थ – नरक जाने के चार द्वार हैं, जिसमें पहला रात्रि भोजन, दूसरा परस्त्री सेवन, तीसरा सन्धान अर्थात् अधिक समय का अचार खाना और चौथा अनन्तकायिक अर्थात् आलू आदि जमीकंद सेवन।

मार्कण्डेय पुराण में कहा है –

अस्तंगते दिवानाथे आपो रुधिर मुच्यते ।
अन्नं मांस समं प्रोक्तं मार्कण्डेय महिर्षणा ॥

अर्थ – सूर्य के अस्त होने पर खाने वाले का अन्न मांस के समान एवं जल खून के समान कहा है।

मार्कण्डेय पुराण में कहा है –

मृते स्वजन मात्रेपि सूतकं जायते किल ।
अस्तंगते दिवानाथे भोजनं कथं क्रियते ॥

अर्थ – स्वजन का अवसान हो जाता है तो सूतक लग जाता है, जब तक शव का संस्कार नहीं होता तो भोजन नहीं करते हैं। जब सूर्यनारायण का अस्त हो जाता है तो सूतक लग गया अब क्यों भोजन करेंगे अर्थात् नहीं करेंगे।

ऋषीश्वर भारत में कहा है –

मद्यमांसाशनं रात्रौ भचेजनं कंद भक्षणम् ।
ये कुर्वन्ति वृथा तेषां, तीर्थयात्रा जपस्तपः ॥
वृथा एकादशी प्रोक्ता वृथा जागरणं हरे : ।
वृथा च पुष्करी यात्रा वृथा चान्द्रायणं तपः ॥

अर्थ – मद्य मांस का सेवन, रात्रि में भोजन एवं कंदमूल भक्षण करने वाले के तप, एकादशी व्रत, रात्रि जागरण, पुष्कर यात्रा तथा चान्द्रायण व्रतादि सब निष्फल हैं

कहानी

सच्चा मित्र

एक राजा जब बूढ़ा हो गया तो उसने अपने पुत्र को राज्य देने का निर्णय किया। परन्तु पुत्र को राजकार्य को अनुभव कम था इसलिये राजा ने सोचा कि पुत्र के साथ उसका एक सच्चा मित्र होगा तो उसे सही सलाह देता और और संकट में उसकी सहायता भी कर सकेगा। वैसे तो राजकुमार के अनेक मित्र थे परन्तु सच्चे मित्र का पहचान करना आवश्यक थी। इसके लिये राजा ने एक योजना बनाई और अचानक घोषणा कर दी कि राजकुमार को देश से बाहर निकाल दिया जाये और जो भी राज्य का निवासी राजकुमार की सहायता करेगा उसे कठोर दण्ड दिया जायेगा। यह घोषणा सुनकर राज्य के निवासियों को कुछ समझ नहीं आया, सब अचंभित रह गये। सभी राजकुमार की सहायता करना चाहते थे परन्तु राजा के भय से कोई भी राजकुमार की सहायता को तैयार नहीं हुआ। राजकुमार को समझ में नहीं आ रहा था कि बिना किसी अपराध या गल्ती के इतना कठोर दण्ड क्यों दिया राजकुमार ने राजा से पूछने प्रयास किया परन्तु राजा ने मिलने से मना कर दिया।

इस संकट के समय में राजकुमार अपने एक मित्र के पास सहायता मांगने के लिये गया परन्तु राजकुमार को घर की ओर आते देखकर मित्र ने दरवाजे बंद कर लिये। दूसरे मित्र ने राजकुमार की सहायता करने से मना कर दिया, पर इतना ही कहा कि राजकुमार मैं राजा के आदेश से बंधा हुआ हूँ। परन्तु सहयोग के लिये तुम मेरे घोड़े अवश्य ले जा सकते हो। राजकुमार निराश होकर लौट गया और तीसरे मित्र के पास पहुँचा। तीसरे मित्र ने उसकी सारी बात सुनी और कहा राजकुमार! आप मेरे मित्र हैं। मैं आपका सदा साथ निभाऊंगा। चाहे इसके लिये मुझे कोई भी दण्ड भुगतना पड़े। यदि राजा आदेश देंगे तो मैं भी आपके साथ देश से बाहर निकल जाऊंगा परन्तु आपका साथ कभी नहीं छोडूँगा। पर मैं एक बार राजा से अवश्य पूछना चाहता हूँ कि आपने राजकुमार को किस अपराध का दण्ड दिया है?

राजकुमार के मना करने के बावजूद वह राजसभा में पहुँचा और राजा को विनयपूर्वक नमस्कार किया और विनम्रता से राजकुमार के दण्ड का कारण पूछा और साथ में राजकुमार को अपना परम मित्र बताते हुये उसका साथ देने का निर्णय भी सुना दिया। राजा ने उसे डराया, धमकाया और कठोर दण्ड की चेतावनी भी दी। परन्तु मित्र ने स्पष्ट कह दिया चाहे कुछ भी हो मैं अपने मित्र का साथ नहीं छोड़ूँगा।

यह सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हो गया और सिंहासन से उतरकर उस मित्र को गले से लगा लिया। यह देखकर सभी मंत्री और राजदरबारी आश्चर्यचकित थे। राजा ने कहा – राजकुमार को कोई दण्ड नहीं है, मैं तो मात्र राजकुमार के सच्चे मित्र का पता करने के लिये परीक्षा कर रहा था। राजकुमार को दरबार में लाया गया और उसे देश का राजा बनाया गया और उसके सच्चे मित्र को राजकुमार का विशेष सलाहकार नियुक्त किया गया।

बच्चो ! उन तीन मित्रों की तरह हमारे भी तीन साथी हैं। एक परिवार और कुटुम्ब के लोग दूसरा शरीर और तीसरा धर्म। कुटुम्बी और परिवारजन तो हमारी विपत्ति देखकर भाग जाते हैं, शरीर साथ तो नहीं देता परन्तु हमारे अच्छे आचरण में निमित्त रूप से साथ देता है और तीसरा है धर्म जो कि सच्चे मित्र की तरह है। चाहे कैसी भी परिस्थिति हो धर्म कभी साथ नहीं छोड़ता। जो धर्म को नहीं भूलता धर्म भी उसे कभी नहीं भूलता। इसलिये हमें सदा धर्म रूपी मित्र के साथ रहना चाहिये जो हमें पापों से बचाकर मोक्षमार्ग में लगाता है।

हिंगोली में दशलक्षण पर्व सानंद सम्पन्न

महाराष्ट्र के प्रमुख शहर हिंगोली में दशलक्षण पर्व सानंद उत्साह सहित संपन्न हुये। इस अवसर पर विशेष रुप से पधारे पण्डित विराग शास्त्री, के प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: परमार्थ वचनिका, दोपहर विभिन्न स्तोत्रों का अर्थ, रात्रि में समयसार के महत्वपूर्ण कलशों के माध्यम से स्वाध्याय हुआ। समयानुसार अतिशय क्षेत्र जिन्तूर, परभणी, अमरावती में भी विराग शास्त्री के द्वारा हुये स्वाध्याय का लाभ समाज को मिला। परभणी में विश्वशांति ज्ञानपीठ के संस्थापक श्री यज्ञकुमार करेवार द्वारा सभी साधर्मियों को धार्मिक संस्कार प्रेरक सी.डी. का वितरण किया गया। सभी स्थानों पर चहकती चेतना के सदस्य बने।

– अमोल संघई, हिंगोली

आगम की बातें

प्रश्न – लंगड़े कैसे और कौन से कर्म के उदय से होते हैं?

उत्तर – जो व्यक्ति पशुओं के ऊपर उनकी शक्ति से अधिक भार लादते हैं, लदवाते हैं, पैरों से प्राणियों को कष्ट देते हैं, रास्ते में बिना देखे चलते हैं, तीर्थ वंदना नहीं करते, ऐसे निर्दय चित्त वाले जीव मरकर लंगड़े होते है । यह अंगोपांग नामकर्म के उदय से होता है।

प्रश्न – बहरे कैसेऔर कौन से कर्म के उदय से होते हैं?

उत्तर – जो मूर्ख व्यक्ति दूसरों की निन्दा करते हैं, विकथा करते हैं, केवली परमात्मा और मुनि संघ, श्रावक, धर्मात्माओं और जिनवाणी का अविनय करते हैं, अपना समय व्यर्थ की बातें सुनने में बरबाद करते हैं, वे बहरे होते है । यह उदय कुज्ञानावरण नार्म कर्म के उदय से होता है।

प्रश्न – अंधे कैसे और कौन से कर्म के उदय से होते हैं?

उत्तर – जो अन्य लोगों के देखे या बिना देखे दोषों को कहते हैं, नेत्रों की अनेक प्रकार की मुद्रायें बनाते हैं, पर स्त्री को विकार से देखते हैं, टी.वी. आदि में पापों को देखते हैं वे मनुष्य अन्धे होते हैं। यह चक्षुदर्शनावरण के उदय से होता है।

प्रश्न – गूंगे कैसे और कौन से कर्म के उदय से होते हैं?

उत्तर – जो लोग मजाक आदि करके अपना समय नष्ट करते हैं , दूसरों के मनोरंजन के लिये अनेक झूठी कथा प्रसंग कहते हैं , जिनवाणी का अपनी इच्छानुसार अर्थ करते हैं, जिनवाणी को अविनय से और प्रशंसा के लिये पढ़ते हैं, दूसरों को दोष कहने में अपना समय बरबाद करते हैं वे जीव गूंगे होते हैं। ये ज्ञानावरण नाम कर्म के उदय से होता है।

प्रश्न – इस लोक में कौन व्यक्ति गुणीवान लोगों द्वारा पूज्यनीय होता है ?

उत्तर – जो पुरुष जिनेन्द्र भगवन्तों की स्तुति करता है, गणधरों और अन्य मुनिराजों की उपासना करता है, धर्म के आचरण शक्ति अनुसार पालन करना है, सदा दूसरों के गुणों की निन्दा करता है, जो दुर्गुणों से सदा दूर रहता है वह लोक में सदा गुणीवान लोगों द्वारा प्रशंसा का पात्र होता है।

जैन धर्म के सम्बन्ध विश्व के बड़े विद्वानों के विचार

- जबसे आदि शंकराचार्य ने जैन सिद्धान्त का खंडन किया है तबसे मुझे विश्वास हो गया है कि जैन सिद्धान्त में कुछ बात अवश्य है। यदि वेदान्त के आचार्य मूल जैन ग्रन्थों को पढ़ते तो वे जैन सिद्धान्त का खण्डन कभी नहीं करते।

– महामहोपाध्याय पण्डित गंगानाथ झा

1– भारत के इतिहास में एक दिन ऐसा था जब जैन सम्प्रदाय के आचार्यों के हुंकार से दसों दिशायें गूंज उठती थीं।

2– जैन मत तबसे प्रचलित हुआ जबसे संसार का प्रारंभ हुआ।

3– मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि जैन दर्शन वेदों से पूर्व का है।

– महामहोपाध्याय स्वामी राममिश्रजी शास्त्री

- भारतवर्ष के सर्वप्रथम महर्षि ऋषभदेव हुये। वे प्रथम तीर्थंकर थे। इसके पश्चात् अजितनाथ से लेकर महावीर पर्यन्त तेईस तीर्थंकर अपने – अपने समय में अज्ञानी जीवों का मिथ्यात्व नाश करते रहे।

– तुकाराम शर्मा, एम.ए.,पी.एच.डी.

- महावीर ने शंखनाद कर ऐसा संदेश फैलाया कि धर्म सामाजिक रूढ़ि नहीं है परन्तु वास्तविक सत्य है। मोक्ष यह बाहरी क्रिया कांड पालने से नहीं मिलता परन्तु सत्य स्वरूप का आश्रय करने से मिलता है। महावीर की शिक्षाओं ने समाज की जड़ बुद्धि को भेद कर देश को वशीभूत कर लिया।

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

- जैन धर्म हिन्दू धर्म से स्वतन्त्र धर्म है। यह हिन्दू धर्म की शाखा या रूपान्तर नहीं है।

– ब्रिटिश विद्वान मैक्समूलर एवं डॉ. हर्मन जेकोबी, जर्मनी

- जैन धर्म का उल्लेख हिन्दुओं के पूज्य वेद में भी मिलता है। वेदों में जैन धर्म का अस्तित्व सिद्ध करने वाले बहुत से मन्त्र हैं। भागवत आदि महापुराणों में ऋषभदेव के विषय में गौरवयुक्त उल्लेख मिलता है।

– स्वामी विरूपाक्ष वडियर

- दो ढाई हजार वर्ष पहले दुनिया के अधिकतर लोग जैन धर्म के उपासक थे।

– राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द

- मैं अपने देशवासियों को दिखाऊँगा कि जैन धर्म के आचार्यों के नियम और विचार कितने ऊँचे हैं। मैं इन्हें बहुत पसन्द करता हूँ।

– डा. जोहन्नेस हर्टल

- निःसन्देह जैनधर्म ही पृथ्वी का एकमात्र सच्चा धर्म है।

– आवे जे.ए. डवाई

- जैन धर्म के प्रारम्भ को पाना असंभव है। महावीर के द्वारा इसका पुनः संजीवन हुआ है।

– जे.सी.आर. फरलांग, एफ आर.ए.सी.ई.

जैन गजट/ सोमवार, 29 जुलाई, 2013

तिरुमला- तिरुपति यह जैन मंदिर है- एक सत्य

मूल में यह प्रतिमा तीर्थंकर नेमिनाथ की जिसको सब तरफ से अत्यन्त भव्य बेमोल जडजवाहिर हीरे रत्नों से पूरी तरह से ढंक दिया है। वीं शताब्दी की यह नेमिनाथ की प्रतिमा मूल रूप इस चित्र के अनुरूप है।

प्रेषक- भरत कुमार काला, मुम्बई

क्या आप जानते हैं तिरुपति-बालाजी- एक जैन मंदिर है

कृष्णराव एस डी. कहते है- मैं एक हिंदू इतिहासकार हूँ। मैंने 'बुखारिया संधि' के नाम से एक प्राचीन आलेख (इस्क्रिप्सन) पढ़ा। यह आलेख-दस्तावेज (इस्क्रिप्सन) बेंगलोर की सेंट्रल लायब्रेरी, पुरातत्व संभाग कर्नाटक में उपलब्ध है। १४ वीं शताब्दी में जैनों और वैष्णवों में एक संधि हुई थी कि जैनों को तिरुमलाई (तिरुपति) के नेमिनाथ जैन मंदिर को वैष्णो को सौंप देना होगा और वैष्णव श्रवणबेलगोला के बाहुबली प्रतिमा (स्टेच्यु) को नष्ट नहीं करेंगे। अन्यथा बुखारिया राजा विजयनगर राज्य के स्थापनकर्ताओं में से एक है। उसके राज्य के सभी जैनों को दंडित कर देगा........................

- अनुवादक भरत कुमार काला, मुम्बई

अंग्रेजी का मूल (वेबसाईट और एस.एम.एस. से प्राप्त आधार पर)

विश्व विख्यात तिरुपति बालाजी मंदिर जैन मंदिर है..........

विश्व के सर्वाधिक धनी मंदिरों में से एक तिरुपति बालाजी मूल रूप से जैन मंदिर है। इसे स्वामी रामानुजम ने करीब आठवीं शताब्दी में हजारों द्रविड़ मंदिरों के साथ – साथ इसे भी अपनी मान्यता अनुसार परिवर्तित कर दिया था। यह मंदिर मूलतः जैन धर्म के 22 वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का मंदिर था। इसका इतिहास में उल्लेख भी है जबकि वर्तमान में मान्य भगवान व्यंकटेश का कोई भी इतिहास उपलब्ध नहीं है। इस सम्बन्ध में अनेक इतिहासकारों ने समय – समय पर अपना मत प्रस्तुत करते हुये कहा कि यह प्रसिद्ध मंदिर प्राचीन जैन मंदिर है। अनेक ब्राह्मण एवं पुरातत्वविद भी दबी आवाज में स्वीकार करते हैं कि यह द्रविड संस्कृति का जैन मंदिर ही है। वे स्वीकार करते हैं कि इस जैन मंदिर के साथ दक्षिण के सैंकड़ों जैन मंदिरों को रामानुजम और शंकराचार्य ने हिन्दू मंदिरों में परिवर्तित कर दिया। आर्य संस्कृति भारत की मूल संस्कृति नहीं है, आर्य लगभग 3500 वर्ष भारत में आये और अपना साम्राज्य स्थापित करने के लिये उन्होंने द्रविड़ लोगों की जमीन, संस्कृति पर कब्जा करना प्रारंभ किया। इन्हें यह महसूस होने लगा कि आजीविका चलाने के लिये मंदिरों पर कब्जा करना चाहिये, इन मंदिरों से अच्छी आय होती थी। इन्होंने जातिवाद का जहर फैलाया और जैन मंदिरों को व्यंकटेश्वर, कपालीश्वरा, वरादापेरुमाल आदि नामों से परिवर्तित कर दिया। भगवान कपिलेश्वरा, मीनाक्षी, कामाक्षी आदि भगवान का इतिहास में कोई उल्लेख नहीं मिलता। ये सब काल्पनिक अवतार बनाये गये। साथ तमिलनाडु के जैन संत द्वारा लिखित ग्रन्थ तिरुकुरल भी हिन्दू संत के द्वारा लिखा कहकर उस पर कब्जा कर लिया।

तिरुपति बालाजी एक अतिशयकारी मंदिर है, यहाँ प्रतिवर्ष हजारों यात्री दर्शन करते हैं। हिन्दू धर्म में प्रत्येक भगवान का अभिषेक, श्रृंगार आदि अन्य क्रियायें लोगों की उपस्थिति में सबके सामने की जाती हैं परन्तु तिरुपति में भगवान का अभिषेक गुप्त रूप से बंद कमरे में किया जाता है। इस प्रतिमा की नग्न अवस्था में भी फोटो ली गई है यह आठवीं शताब्दी की काले पत्थर से निर्मित नेमिनाथ भगवान की खड्गासन प्रतिमा है। अभिषेक, श्रृंगार आदि क्रियायें करने के पश्चात् नेमिनाथजी की प्रतिमा को अत्यन्त बहुमूल्य हीरे, जवाहरात से ढंक दिया जाता है। इसका चेहरा भी स्पष्ट दिखाई नहीं देता। इस तरह सैकड़ों वर्षों से जैन समाज से छल किया जा रहा है।

इस सम्बन्ध में कृष्णराव एस.टी. राव कहते है कि मैं एक हिन्दू इतिहासकार हूँ। मैंने बुखारिया संधि के नाम से एक प्राचीन आलेख पढ़ा। यह आलेख दस्तावेज बैंगलोर की सेन्टल लायब्रेरी पुरातत्व संभाग कर्नाटक में उपलब्ध है। इसके अनुसार 14 वीं शताब्दी में जैनों और वैष्णवों में एक संधि हुई थी कि जैनों को तिरुमलाई (तिरुपति) के नेमिनाथ जैन मंदिर को वैष्णवों को सौंपना होगा और वे (वैष्णव) श्रवणबेलगोला की भगवान बाहुबली की प्रतिमा को नष्ट नहीं करेंगे अन्यथा (यदि बात नहीं मानी तो) राजा बुखारिया (जो कि विजय नगर के स्थापनकर्ता हैं वे) उसके राज्य के सभी जैनों को दंड देंगे।

विशेष जानने योग्य बात यह है कुछ समय पूर्व तक तिरुपति बालाजी की आधिकारिक बेवसाइट पर तिरुपति बालाजी के परिचय की पहली ही लाइन में लिखा था तिरुपति बालाजी एक प्राचीन जैन मंदिर था।

ये है हमारे जैन धर्म का गौरव।

– भरत कुमार काला, मुम्बई – जैन गजट से साभार

महावीर मुद्रा अंग्रेजों के समय में भी

जैनधर्म अत्यंत प्राचीन धर्म है और इस धर्म की परम्परा तथा महत्ता अनादिकाल से प्रचलित है। ब्रिटिश काल में भगवान महावीर की मुद्रा का प्रयोग किया जाता था। उस समय यह मुद्रा ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा जारी की गई थी। यह मुद्रा औरंगाबाद के अरिहंत नगर निवासी एडवोकेट श्री के.डी. पाटे पास आज भी उपलब्ध है। यह मुद्रा सन् 1839 की है। इस पर ईस्ट इण्डिया कंपनी की मुहर लगी हुई है। यह मुद्रा तांबे की बनी हुई है। इस पर एक ओर भगवान महावीर की मुद्रा अंकित है तथा दूसरी ओर ओम् अंकित है साथ ही अर्ध चंद्र, अर्ध सूर्य और त्रिशूल भी अंकित है। यह आधे आने मूल्य की मुद्रा है।

नरेन्द्र अजमेरा, औरंगाबाद

फुरसत

दिल्ली नांगलोई के निवासी जिनवाणी के परम उपासक लाला हरिरामजी को स्वाध्याय की अत्यंत रुचि थी। वे अधिकांश समय स्वाध्याय करते रहते थे। एक दिन उन्हें स्वाध्याय करते हुये कई घंटे हो गये, कभी वहीं कमरे में खड़े हो जाते और कभी बैठ जाते। उनकी धर्मपत्नी ने देखा तो वे बोलीं – थोड़ी देर को बाहर घूम आओ या शाम हो गई है, आराम कर लो। यह काम फुरसत में कर लेना। लालाजी तुरन्त बोले – तुम्हें ये फुरसत का काम दिखाई दे रहा है। मुझे कितना काम है इसका अनुमान तुम्हें नहीं है। मुझे ये समय भी कम लगता है और लालाजी वहीं बैठकर आत्म चिन्तन करने लगे।

वाह अचिन्त्य वाह

भोपाल निवासी श्री सौरभ सौगानी का 7 वर्षीय पुत्र अचिन्त्य सौगानी कमाल का बालक है। यह बालक प्रतिदिन जिनेन्द्र भगवान के दर्शन किये बिना कुछ भी नहीं खाता। 3 वर्ष की उम्र से पाठशाला जा रहा है। अचिन्त्य कहता है कि जब मैं 8 वर्ष का हो जाऊँगा तो मैं सम्यग्दर्शन प्राप्त करूँगा और मुनिराज बनूँगा। अचिन्त्य को अनेक भजन, स्तुतियाँ तथा जिनधर्म के अनेक सिद्धांत याद हैं और वह अनेक तीर्थ क्षेत्रों की वंदना कर चुका है। अचिन्त्य के उज्ज्वल भविष्य के लिये महकती चेतना परिवार की ओर से कोटि–कोटि शुभकामनायें।

तीन बातें

1. इन तीनों से सदैव बचो –
   1.प्रतिष्ठा 2. प्रदर्शन 3. प्रतिस्पर्द्धा
2. इन तीनों से दूर रहो –
   1. बनावट 2. दिखावट 3. सजावट
3. इन तीन के कारण कभी विवाद मत करो –
   1. जर (सम्पत्ति) 2. जोरू (स्त्री) 3. जमीन
4. इन तीन से सावधान रहो
   1. कीर्ति 2. कंचन 3.कामिनी
5. इन तीनों से अभिमान मत करो
   1. मंच 2. माईक 3. माला
6. इन तीन से घृणा मत करो –
   1. रोगी से 2. दुःखी से 3. नीची जाति वाले से
7. तीन की संगति मत करो –
   1. वेश्या 2. जुआरी 3. शराबी
8. तीन से मजाक मत करो –
   1. अंगहीन से 2. विधवा–अनाथ से 3.दीन दुःखी जीव से
9. तीन को गुरु मत बनाओ –
   1. स्त्री–सेवक 2. धन के लोभी को 3. घमण्डी को
10. तीन बातों की चर्चा मत करो –
    1. अपने गुणों को 2. दूसरों के दोषों को 3. भोग–विलास की
11. तीन के सामने नम्र बनो –
    1. गुरुजन के 2. विद्वान के 3.राजपुरुष के

ऐसे बनती है पानी पुरी

आप बाजार में जिस पानीपुरी को बड़े शौक से खाते हैं जरा देखिये उसका आटा ऐसे तैयार किया जाता है। क्या अब भी आप खायेंगे पानीपुरी.....................

नेस्ले के उत्पाद में घोड़े का मांस

खाद्य पदार्थ बनाने वाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी स्विट्जरलेण्ड की नेस्ले कंपनी के बारे एक सूचना आई है उसके खाद्य उत्पादों में घोड़े का मांस की मिलावट पाई गई है। इस बात की पुष्टि होने के बाद कंपनी ने इटली और स्पेन के बाजारों से अपने रेडीमेड पास्ता व्यंजन हटा लिये हैं। डीएनए परीक्षण से यह साबित हुआ कि कंपनी ने अपने खाद्य पदार्थों में घोड़े का डीएनए मिलाया है । कंपनी के प्रवक्ता के अनुसार खाद्य पदार्थों में घोड़े के मांस की मात्रा बहुत कम है । परन्तु लैब रिपोर्ट के अुसार यह मात्रा एक प्रतिशत से अधिक है।

नेस्ले के 'उत्पाद' में भी घोड़े का मांस!

एजेंसियां ■ रोम

खाद्य उत्पाद बनानेवाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी स्विट्जरलैंड की नेस्ले का नाम उस विवाद में शामिल हो गया है, जिसमें गाय के मांस से बने उत्पादों में घोड़े के मांस की मिलावट के मामले सामने आये हैं. नेस्ले ने अपने कुछ उत्पादों में घोड़े के डीएनए मिलने के बाद इटली और स्पेन के बाजारों से अपने रेडी मेड पास्ता व्यंजन हटा लिये हैं. जर्मनी से आये मीट से बने नेस्ले के खाद्य पदार्थों में डीएनए परीक्षण के जरिये घोड़े का मांस पाया गया है. कंपनी के प्रवक्ता के मुताबिक खाद्य पदार्थों में घोड़े के मांस के अंश बेहद कम हैं लेकिन ये एक फीसदी से ऊपर पाये गये हैं.

Nestlé

बीबीसी हुई बातचीत में उन्होंने कहा कि जर्मनी के उनके इस सप्लायर के माल में गड़बड़ी पायी गयी है.

स्वास्थ्य पर असर: परीक्षण के बाद नेस्ले ने इटली और स्पेन से बुइटोनी बीफ रैवियोली और बीफ टॉर्टेलिनी को हटा लिया है. पिछले हफ्ते कंपनी ने कहा था कि उनके खाद्य पदार्थों में घोड़े का मांस नहीं है. मामला सामने आने के बाद कंपनी अब अपने सभी उत्पादों का परीक्षण करवायेगी.

प्रश्न आपके – उत्तर जिनागम से

1. स्वप्न में किसी को मारें– पीटें अथवा कषाय करें तो उसका पाप बन्ध होता है या नहीं ?

उत्तर– जैसे संस्कार होते हैं, वैसे ही स्वप्न आते हैं अतः पाप बन्ध होता है।

2. क्या दस साल का बच्चा मुनिराज को आहार दे सकता है ?

उत्तर– मुनिराज को 9 प्रकार की भक्ति वाला ही आहार दे सकता है। जो नवधा भक्ति नहीं जानता वह आहार देने का पात्र नहीं है, चाहे वह बालक हो या बड़ा।

3. डबलरोटी ब्रेड भक्ष्य या अभक्ष्य ?

उत्तर– डबलरोटी और ब्रेड बाजार के मैदा से बनाये जाते हैं और मैदा अधिक दिन का होने से उसमें असंख्यात त्रस जीव पैदा हो जाते हैं और बाजार में मैदा पीसने के पहले गेहूँ को अच्छी तरह साफ भी नहीं किया जाता इसलिये वह महाअभक्ष्य पदार्थ है।

4. यदि किसी की मृत्यु शाम को हो गई हो तो सूर्यास्त के बाद शव का दाह संस्कार करना उचित है या नहीं ?

उत्तर– मृत्यु के बाद शव में अनंत पंचेन्द्रिय लब्ध पर्याप्तक सूक्ष्म मनुष्याकार जीव उत्पन्न हो जाते हैं इसलिये दाह संस्कार रात्रि को भी तत्काल कर देना चाहिये। रात्रि में हिंसा तो होगी ही परन्तु सुबह की तुलना में बहुत कम होगी।

5. मकड़ी घर में जाल बनाती है, हम उसके जाल को तोड़ते हैं। इस प्रकार किसी का घर तोड़ना हिंसा है या नहीं ?

उत्तर– किसी का घर मिटाना हिंसा ही है। इसलिये घर में इतनी साफ सफाई रखना चाहिये कि मकड़ी जाल बना ही नहीं पाये।

6. मूलगुण का क्या मतलब है ? जैसे मुनि के 28 मूलगुण।

उत्तर– मूल का अर्थ जड़। जैसे जड़ के बिना वृक्ष नहीं रह सकता, उसी प्रकार मूलगुणों के बिना श्रावक या मुनि का पद प्राप्त नहीं हो सकता।

7. आर्यिकाजी को आहार के समय प्रदक्षिणा देना और अर्घ्य चढ़ाना जिनवाणी के अनुसार सही है ?

उत्तर– जिनागम के अनुसार देव–शास्त्र– गुरु (आचार्य, उपाध्याय, साधु) ही पूजन योग्य हैं, आर्यिका की न ही प्रदक्षिणा करना चाहिये, न ही उन्हें अर्घ्य चढ़ाना चाहिये। भगवती आराधना में कहा है – साधु वंदन करने योग्य है और आर्यिका आदि की यथायोग्य विनय करना चाहिये। आर्यिका को नमस्कार नहीं इच्छामि कहना चाहिये।

चहकती चेतना के पुराने अंक उपलब्ध

चहकती चेतना पत्रिका पिछले 7 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। इसके अब तक 27 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें कुछ अंकों को छोड़कर शेष सभी पुराने अंक उपलब्ध हैं। यदि इन अंकों को प्राप्त करना चाहते हैं तो आप संस्था से संपर्क कर सकते हैं। प्रत्येक अंक का मूल्य 20 रु. निर्धारित है। ये समस्त अंक पी.डी.एफ. में भी उपलब्ध हैं, जिन्हें आप अपने कम्प्यूटर में भी पढ सकते हैं। सी. डी. का मूल्य 50 रु. है। इसके अतिरिक्त यह समस्त अंक हमारी बेबसाइट www.vitragvani.com और www.sarvodayachetna.com से डाउनलोड कर सकते हैं।

संस्था की वेबसाइट प्रारंभ

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर की गतिविधियों की जानकारी हेतु संस्था की वेबसाइट प्रारंभ की गई है। इसे आप www.sarvodayachetna.com के नाम से देख सकते हैं। इसका कार्य अभी प्रारंभिक चरण में है। शीघ्र ही इसे व्यवस्थित कर दिया जायेगा। इस वेबसाइट में संस्था द्वारा निर्मित समस्त सी.डी., साहित्य, चहकती चेतना के पुराने अंक, आगामी योजनायें, आगामी कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

अष्टान्हिका पर्व में विधान संपन्न

जबलपुर के श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिन मंदिर में अष्टान्हिका महापर्व पर श्री रत्नत्रय मंडल विधान संपन्न हुआ। दिनांक 15 जुलाई से 22 जुलाई तक आयोजित इस विधान में पण्डित श्री उत्तमचंदजी जैन छिंदवाड़ा के सारगर्भित व्याख्यानों का लाभ मिला। विधान की सम्पूर्ण विधि श्री विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा संपन्न कराई गई।

जीर्ण – शीर्ण साहित्य अथवा पुरानी पत्र पत्रिकाओं को यहाँ भेजें

यदि आपके घर में जीर्ण – शीर्ण जैन साहित्य अथवा पत्र – पत्रिकायें हैं जो आपके लिये अनुपयोगी हों आप उन्हें निम्न पते पर भेजकर विराधना के पाप से बचें। यदि आप उसे बाजार में बेचेंगे या घर में व्यवस्थित नहीं रखेंगे तो आपको जिनवाणी की अविनय का पाप लगेगा। अतः संस्था से संपर्क करके व्यवस्थित पार्सल बनाकर निम्न पते पर भेजें, यहाँ उपयोगी साहित्य को इच्छुक साधर्मियों को अथवा जिन मंदिरों को दिया जाता है व शेष साहित्य को गलने के लिये भेजा जाता है जहाँ उसका पुनः पेपर तैयार होता है। प्राचीन आचार्यों के एवं आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी से सम्बन्धित साहित्य को भेजने के लिये पता – पराग हरिवर्धन, सत्यपंथी, ईश्वर कॉम्पलेक्स, स्टेडियम सर्कल, नवरंगपुरा, अहमदाबाद 380009 गुज. 079-26423754

अन्य समस्त प्रकार का साहित्य एवं पत्र – पत्रिकायें भेजने के लिये पता –
जैन पथ / श्रीमति आरती जैन ए- 11, यूनिक कैम्पस, संत आशाराम नगर, बागसेवनियां भोपाल 462043 म.प्र. मचे. 9477907631

आपके बश से

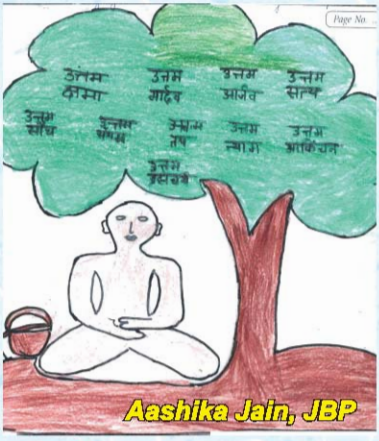

Aashika Jain, JBP

Sannadhi Sanjay Jain, JBP

Deshina Rajiv Jain, JBP

Paridhi Sanjay Jain, JBP

जन्मदिन की शुभकामनायें

ऋषि आपका नाम है, हो जिनवाणी ज्ञान ।
सीता सोमा आर्या हो, बन जाना भगवान ॥

ऋषि स्वप्निल जैन, सूरत 22 अगस्त 2013

आर्जव अपना धर्म है, वैसा सौम्य महान ।
जन्म दिवस पर यही भावना, बनना तुम भगवान ॥

आर्जव आशीष पाटनी, वाशिम महा. 8 अक्टूबर 2013

जीविका आपका नाम है, करो जीव का काम ।
बस जाओ वैसो सच, होना सिद्ध समान ॥

जीविका हेमन्त जैन, कोलकाता 17 नवम्बर 2011

यदि आप भी अपने अथवा अपने सम्बन्धियों के बच्चों के जन्म दिवस पर शुभकामनायें प्रकाशित करवाना चाहते हों तो मात्र 100/- रुपये और अपनी फोटो भेजें ।

संस्था द्वारा 6000 रु. में 15 वर्षीय सदस्यता प्रदान की जाती है । इस योजना के अंतर्गत पाठशाला चेतना के साथ संस्था द्वारा निर्मित होने वाली समस्त सी.डी. और साहित्य निःशुल्क भेजी जाती है । पूर्व में निर्मित सीडी और साहित्य भेजा जायेगा । इस योजना में निम्न नये महानुभावों ने सदस्यता ग्रहण की –

1. अभिषेक राजीव जैन, रोहिणी, दिल्ली 2. प्रणय जोशी, पंढरपुर महा.
3. प्रदीप कोठारी हिंगोली महा. 4. अक्षय कुमार कंकण, हिंगोली

पाठशाला चेतना प्रचार-प्रसार हेतु प्राप्त - 6000/- श्रीमति उर्वशी विजय कोठारी घाटकोपर मुंबई
नवीन योजनाओं में प्राप्त - 2100/- श्री सुरेश भोगावत, मुम्बई
1000/- श्री शान्तिलालजी जैन, सूरत द्वारा अपनी प्रपौत्री कु. ऋषि स्वप्निल जैन के जन्म दिवस पर प्राप्त एवं 1000/- श्रीमति हंसा विजय पाटोदी, जबलपुर

ध्यान दें — स्पष्टीकरण

पिछले अंक क्रमांक 27 के पेज नं. 5 पर तीर्थंकर भगवन्तों की विशेषतायें प्रकाशित की गई थीं । इसमें क्रमांक 3 पर लिखा था कि तीर्थंकर गृहस्थ अवस्था में देवों द्वारा लाये गये वस्त्र व भोजन को ग्रहण करते हैं । लेकिन मुनि अवस्था में देव भोजन नहीं लाते । वे वहीं के श्रावकों द्वारा निर्मित भोजन ग्रहण करते हैं । हमने भी इसी आधार से जानकारी प्रकाशित की थी । –संपादक

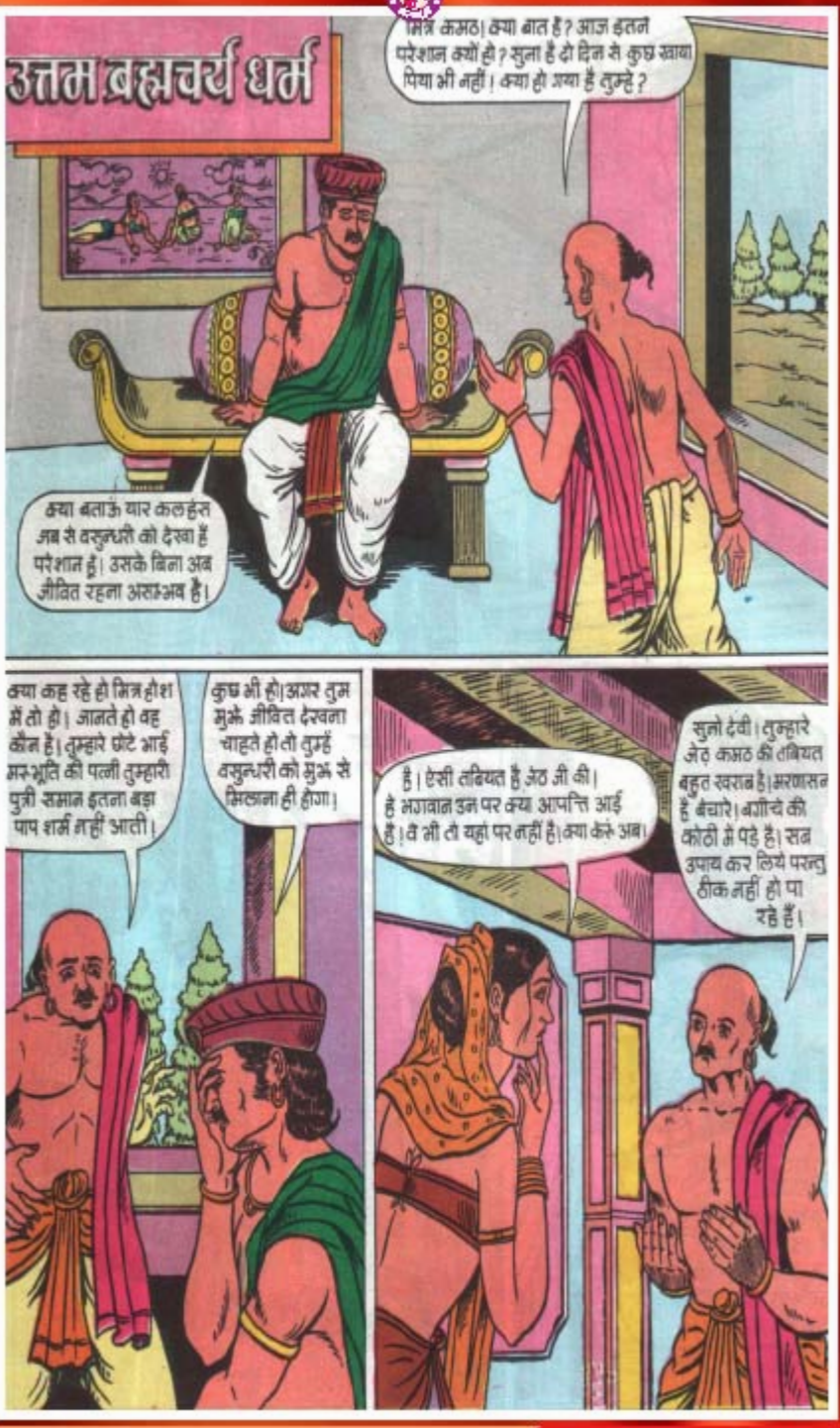

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म
मित्र कमठ। क्या बात है? आज इतने परेशान क्यों हो? सुना है दो दिन से कुछ खाया पिया भी नहीं। क्या हो गया है तुम्हें?
क्या बताऊं यार कलहंस जब से वसुन्धरी को देखा है परेशान हूं। उसके बिना अब जीवित रहना असम्भव है।
क्या कह रहे हो मित्र होश में तो हो। जानते हो वह कौन है। तुम्हारे छोटे भाई मरुभूति की पत्नी तुम्हारी पुत्री समान इतना बड़ा पाप शर्म नहीं आती।
कुछ भी हो। अगर तुम मुझे जीवित देखना चाहते हो तो तुम्हें वसुन्धरी को मुझ से मिलाना ही होगा।
सुनो देवी। तुम्हारे जेठ कमठ की तबियत बहुत खराब है। मरणासन्न है बेचारे। बगीचे की कोठी में पड़े है। सब उपाय कर लिये परन्तु ठीक नहीं हो पा रहे हैं।
हे। ऐसी तबियत है जेठ जी की। हे भगवान उन पर क्या आपत्ति आई है। वे भी तो यहां पर नहीं है। क्या करूं अब।

यह तो तुम जानो देवी। पर वह बार बार मरुभूति मरुभूति पुकार रहे हैं। कहीं ऐसा न हो जाये कि मरुभूति के आने से पहले उनके प्राण पखेरू उड़ जायें।
यदि ऐसा हो गया तो आने पर उनकी क्या हालत होगी। उन्हें अपने बड़े भाई से कितना अधिक प्रेम है।
और क्या कहा उन्होंने?
जब मैंने उन्हें कहा कि मरुभूति तो बाहर गया हुआ है। तो उन्होंने कहा अगर मरुभूति नहीं है तो उसकी पत्नी वसुन्धरी से ही कह दो कि वह जरा मुझे देख जाये। अब तो मैं संसार से विदा हो रहा हूँ।
क्या ऐसा कहा उन्होंने? अगर मैं नहीं जाती तो वे आ कर मुझ पर बड़े क्रोधित होंगे और कहेंगे कि मैं नहीं था तो कम से कम तुम्हें तो भैया की खबर लेने जाना चाहिये था।
भैया चलना तो मुझे जरूर चाहिये। परन्तु उनसे पूछे बिना घर से बाहर जाना क्या ठीक रहेगा।
परन्तु अगर उसने दम तोड़ दिया तो जानती हो मरुभूति कितना बुरा भला कहेगा तुम्हें। आगे तुम जानो।
बात तो वे ठीक कह रहे हैं। और मैं किसी और को तो देखने नहीं जा रही हूँ। वह मेरे जेठ ही तो हैं। और जेठ होते हैं। पिता तुल्य।
अच्छा भाई चलो।

वसुन्धरी पहुंची बगीचे में कमठ को बिल्कुल ठीक देखा तो दंग रह गई समझ गई धोखा है! पर कर ही क्या सकती थी बेचारी! कमठ ने पकड़ लिया उसे! रोई चिल्लाई परन्तु व्यर्थ! कमठ ने वह सब कुछ किया जो नहीं करना चाहिये!

मरुभूति के लौटने पर....

मंत्री मरुभूति जी! तुमने सुना तुम्हारे पीछे तुम्हारे भाई ने क्या किया? अब तो हमें उसे दंड देना ही पड़ेगा!

महाराज वह मेरे बड़े भाई हैं! गलती हो गई होगी उनसे, क्षमा कर दिजिये उन्हें!

परन्तु महाराज न माने! कमठ का काला मुंह कर के गधे पर बिठा कर देश निकाला दे दिया गया....

तभी तो पं. घानतराय जी ने सावधान करते हुए कहा है:-

"उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनो,
माता बहिन सुता पहिचानो"

संस्था की योजनाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आमंत्रित है।

शिरोमणि परम संरक्षक	–	1 लाख रूपये
परम संरक्षक	–	51 हजार रूपये
संरक्षक	–	31 हजार रूपये
परम सहायक	–	21 हजार रूपये
सहायक	–	11 हजार रूपये
सहायक सदस्य	–	5 हजार रूपये
सदस्य	–	1000/–

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा । संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सी.डी. और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा । आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें । आप सहयोग राशि हमारी संस्था के पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर के बचत खाता कमांक 1937000101026079 में जमा करा सकते हैं !

हमारी नवीन योजनायें आपका सहयोग आमंत्रित

सभी सहयोगियों के नाम पुस्तक में प्रकाशित किया जायेंगे।

धार्मिक बाल गीतों और कविताओं की पुस्तक –संस्था द्वारा विशेष रूप से बच्चों के लिये गाये जाने वाले धार्मिक बाल गीतों, भजनों और कविताओं की एक पुस्तक तैयार की जा रही इसका कार्य प्रारंभ हो गया है। इस पुस्तक में लगभग 200 बाल कविताओं, भजनों, गीतों का संग्रह होगा। इस पुस्तक को सचित्र और रंगीन प्रकाशित करने की भावना है। इसके प्रकाशन में लगभग 40,000/– का व्यय अनुमानित है।

धार्मिक लोरी वीडियो सीडी – संस्था द्वारा बालकों को रूचिकर, आध्यात्मिक 8 लोरियों की वीडियो सीडी बनाई जा रही है । इस सीडी का अनुमानित व्यय 80 हजार रूपये है । रूचिवंत साधर्मी अपनी भावनानुसार इस कार्य में सहयोग प्रदान कर सकते हैं । प्रत्येक दानदाता का नाम सीडी में सहयोगी के रूप में दिया जायेगा ।

इन दोनों कार्यों में आपका आर्थिक सहयोग आमंत्रित है। आपकी छोटी राशि भी इस महत्वपूर्ण कार्य के लिये बड़ा सहयोग बनेगी। आप अपनी राशि " आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर" के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से भेज सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें – 9300642434. E-mail - chehaktichetna@yahoo.com